एम० ए० (हिन्दी) I सेमेस्टर

डा॰ अनिरुद्ध प्रसाद
महाराजा कॉलेज
आरा॰

तृतीय पत्र

प्रश्न: सिद्ध साहित्य की सामान्य प्रवृतियों की विवेचना करते हुए साहित्य पड़े उनके प्रभाव की समीक्षा कीजिए।

उत्तर

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने हिन्दी साहित्य के इतिहास की भूमिका में लिखा है — "बौद्ध धर्म विकृत होकर वज्रयान संप्रदाय के रूप में देश के पूरबी भागों में बहुत दिनों से चला आ रहा था। इन बौद्ध तांत्रिकों के बीच वामाचार अपनी चरम सीमा पर पहुँच चुका था। ये बिहार से लेकर आसाम तक फैले थे। चौरासी सिद्ध इन्हीं में हुए जिनका परंपरागत स्मरण जनता को अबतक है। इन तांत्रिक योगियों को लोग अलौकिक शक्ति-संपन्न मानते थे। ये अपनी सिद्धियों और विभूतियों के लिए प्रसिद्ध थे।"

कहना न होगा बौद्ध धर्म के इसी विकृत रूप से सम्बद्ध परंपरा के तांत्रिक सिद्ध कहलाते थे। इन सिद्धों में अधिकांश निम्न जाति के थे। इन सिद्धों के प्रमुख का नाम सरहपा था। इन सिद्धों ने अपनी बात जनता तक पहुँचाने के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया वह जन-भाषा अपभ्रंश थी। चूँकि ये सिद्ध लोग ज्यादा पढ़े-लिखे न थे इसलिए इनकी वाणी अटपटी और अपभ्रंश मिश्रित देश-भाषा थी। इन सिद्ध साधकों ने अंतः साधना पर अत्याधिक जोर दिया। जिसके अंतर्गत अंत शुद्धि, इंद्रिय-निग्रह और सदाचार का प्रमुख स्थान था। इन्होंने साधना के लिए भिन्न-भिन्न रूपों का सहारा लिया। इसके लिए वे अपने शरीर को नाना प्रकार से कष्ट दिया करते थे। जिसके कारण उनका शरीर पीड़ाओं को सहते हुए वज्र की तरह कठोर हो जाया करते थे। इनकी तांत्रिक क्रियाओं में मन की एकता, मन के कर्म बंधनों से मुक्ति, मन की चंचलता का विरोध तथा इसके लिए सहज योग को जागृत करना, हठयोग और गुरु की महिमा के महत्व को दिया गया। इन्होंने अपने योग क्रिया के लिए दक्षिण-मार्ग को छोड़कर वाम-मार्ग को ग्रहण किया। सिद्धों में पारंपरिक आग्रहों की झलक दिखलाई पड़ती है। जिसे उन्होंने 'महासुख' की उपाधि से कहा है।

P.T.O

इस महासुख से अविद्या का नाश हो जाता है और साधक को सहज-भाव से मुक्ति मिल जाती है। साधक को सहज-मार्ग को प्राप्त करने के लिए अपने अहं भाव को त्याग करना पड़ता है। यह भाव करुणा और शून्य के मेल से बनता है। करुणा और शून्य के मेल से ही निर्वाण को प्राप्त किया जा सकता है। योगी के लिए सहस्त्रदल कमल के चक्र से होकर गुजरना पड़ता है, इसी चक्र में लीन होकर आनंदावस्था की प्राप्ति की जा सकती है। सहज सुख के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। गुरु की सहायता के बिना मायान मोह का बंधन नहीं कट सकता। इसलिए सिद्धों के यहाँ 'महासुख' की कल्पना की गयी है।

सिद्ध साहित्य में यह बतलाया गया है कि ब्राह्मण, जाति-भेद, मन्त्र आदि से मुक्ति प्राप्त नहीं किया जा सकता। मन्त्र, पूजा-पाठ एवं वेद व उपनिषद का यहाँ विरोध किया गया है क्योंकि ये सब माया के बंधन में बाँधने के उपकरण हैं। इन सबसे मुक्ति पाकर परोपकार, दान, क्षमा एवं करुणा का प्रसार ही मानव-मुक्ति का द्वार खोलता है।

सिद्धों की तंत्र-साधना में मद्य तथा स्त्रियों के सेवन पर जोर दिया गया है। वज्रयान पंथ में सहवास सुख को निर्वाण सुख के बराबर समझा गया। कहीं-कहीं तो सहवास मुद्राओं की मूर्तियाँ तक बनायी गयीं। इस रहस्यमयी सामान्य प्रवृत्तियों के अनुसार सिद्ध-लाभ के लिए ऐसी पहेलियाँ बनायी जाती थीं, जिसे कोई विरले ही बूझ पाता था। इस भाषा के सांकेतिक अर्थ होते थे। रहस्यवादियों के सार्वभौम प्रकृति के अनुसार ही थे। सिद्धों ने अपनी वाणी में जो कुछ भी कहा वह इस उद्देश्य से कहा कि अनाधिकार व्यक्तियों से इसे छिपाया जा सके। इसके लिए उन्होंने कूट भाषा का प्रयोग किया। सिद्धों ने अपनी बातों को रखने के लिए व्यवहारिक शब्दों को ही रूपक के रूप में अपना विषय बनाया।

सिद्ध कवियों की रचनाओं में सामाजिक विद्रोह के स्वर भी मिलते हैं। इन्होंने धर्म के क्षेत्र में घुस आए रूढ़ियों पर प्रहार किया। इन्होंने वेद, शास्त्रों का विरोध किया एवं बाह्यडंबरों और पाखण्ड को तिलांजली देने की आवश्यकता बतलाई।

Scanned with CamScanner

(3)

उन्होंने सहज और नैसर्गिक जीवन को अधिक महत्व दिया।
~~परमार्थ~~, अपने-पराये का भेद, ऊँच-नीच, जाति-भेद छोड़कर परमार्थ को अपनाने का उपदेश उनकी सिद्धि के मंत्र थे।

सिद्धों ने योग-साधनों की अपेक्षा काया-साधना पर अधिक जोर दिया जिसके कारण उनकी साधनावस्था में विकृति उत्पन्न हो गया। किंतु सिद्धों की इस अंतःसाधना को हटा दिया जाए तो सिद्धों की भूमिका सामाजिकता के क्षेत्र में क्रांतिकारिता ~~का~~ का था। इन्होंने न केवल लोगों में परमार्थ की भावना उत्पन्न की बल्कि वर्षों से अंधेरे के गर्त में पड़ी उस जनता को जगाने का काम किया जिनके हृदय में स्वाभिमान की बिलकुल नहीं बची थी। सिद्ध कवियों ने अपने सीधे-सादे उपदेशों के द्वारा सोयी हुयी जनता को जगाने का कार्य किया। इस नीची श्रेणी की जातियों ~~को~~ ने अपने होने के अस्तित्व तक से इंकार कर दिया था। वर्णाश्रम व्यवस्था में इनकी जीवन पशुओं से भी गया-गुजरा था। उनके भीतर स्वाभिमान की भावना को जगाना एवं बाह्य-आडंबरों के खिलाफ विद्रोह करना उस समय की स्थिति में कोई सामान्य कार्य न था। जहाँ सामाजिक स्तर पर छुआछूत एवं जाति-भेद की भावना अपने कट्टर रूप में खड़ी थी। इस दृष्टि से देखने पर सिद्धों द्वारा समाज के लिए किया गया कार्य युगांतकारी थी। इन सिद्धों एवं नाथ-पंथी कवियों ~~ने~~ नीच कही जाने पिछड़ी जातियों पर बड़ा भारी उपकार ~~किया~~ था जिसके कारण आगे चलकर उन्हें सामाजिक बंधनों से मुक्ति मिलने की एक उम्मीद पैदा कर दी थी।